सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व ?

डा. माइकल एच. हार्ट

अनुवाद :

डॉ. रफ़ीक़ अहमद

दो शब्द

बहुचर्चित पुस्तक 'द हन्ड्रेड' **(The Hundred)** के लेखक डा. माइकल एच.हार्ट के नाम से संसार अपरिचित नहीं हैं। वास्तव में वे एक महान विद्वान एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं जिन्होनें अपनी अनेक बहुमूल्य कृतियों से मानव जगत को प्रभावित किया है। डा० हार्ट का क्षेत्र अतिविस्तृत है। वे मात्र एक लेखक ही नहीं बल्कि महान दार्शनिक, ज्योतिषाचार्य, गणितज्ञ, विधिवेत्ता एवं महान वैज्ञानिक भी हैं।

उन्होंने संसार के ऐसे महान ऐतिहासिक व्यक्तियों का परिचय कराने तथा उनके महत्वपूर्ण कार्यों का मूल्यांकन करने का निश्चय किया जिन्होंने मानव-जाति पर असीम उपकार किए हैं। वास्तव में उन्होंने निष्पक्ष विवेचना की और उन महान विभूतियों का कार्यानुसार स्तर भी निर्धारित किया। उन्होंने संसार की सौ महान विभूतियों के नाम भी क्रमबद्ध रूप से उल्लेख किए जिनमें प्रथम नाम अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का है द्वितीय नाम न्यूटन, तृतीय हज़रत ईसा मसीह, चतुर्थ गौतम बुद्ध एवं पंचम नाम कन्फूशियस का है। डा. हार्ट ईसाई धर्म पर विश्वास करते

हैं। इसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण ईसाई जगत इनसे रुष्ट हो गया और उनको कड़े विरोध का भी सामना करना पड़ा, परन्तु डॉ. माइकल हार्ट इस विरोध से तनिक भी विचलित नहीं हुए और साहसपूर्वक उसका सामना करते रहे। उन्होंने विचारकों एवं विद्वानों को चुनौती दी कि यदि वह मेरे इस चयन से सहमत नहीं हैं तो उचित तर्क दें। परन्तु विश्व में कोई भी व्यक्ति उचित तर्क प्रस्तुत न कर सका।

डॉ. माइकल एच. हार्ट ने अपनी पुस्तक में महान विभूति (हज़रत मुहम्मद सल्ल.) को प्रथम स्थान दिया है। उससे हिन्दी जगत को परिचित कराने के उद्देश्य से मैंने ''द हन्ड्रेड'' के प्रथम लेख का अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

आशा है पाठकगण इस प्रयास का निष्पक्ष एवं न्यायपूर्ण मूल्यांकन करेंगे।

डा. रफ़ीक अहमद
फतेहपुर (यू.पी.)

मेरे द्वारा मानव-इतिहास के सर्वाधिक प्रभावशाली महापुरुषों की सूची में हज़रत मुहम्मद सल्ल० को प्रथम स्थान देने पर पाठकों को आश्चर्य होगा और कुछ को मेरे इस चयन पर आपत्ति भी हो सकती है, परन्तु मानव-इतिहास में वह एक अकेले ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने धार्मिक तथा राजनैतिक दोनों ही स्तरों पर महान सफलता प्राप्त की है।

साधारण परिवार में जन्में और पले-बढ़े हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने विश्व के सबसे बड़े धर्मों में से इस्लाम धर्म की स्थापना की और सर्वाधिक प्रभावशाली तथा महान राजनेता बन गये। उनके देहान्त के तेरह-चौदह सौ वर्षों के बाद आज भी उनका प्रभाव सर्वाधिक सशक्त और उतना ही प्रबल एवं व्यापक है।

प्रस्तुत पुस्तक में अधिकांश उन महापुरुषों का उल्लेख है जिनको सभ्यता एवं संस्कृति के प्रमुख केन्द्रों तथा अत्यन्त सभ्य एवं राजनैतिक राष्ट्रों में जन्म लेने तथा पालन-पोषण का सुअवसर एवं लाभ प्राप्त हुआ है। परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्ल. का जन्म 570 ई. में दक्षिणी अरब के मक्का शहर में हुआ था, जो उस समय दुनिया का अत्यन्त पिछड़ा हुआ क्षेत्र था। वह क्षेत्र व्यापार, कला और ज्ञान के केन्द्रों से बहुत दूर था। वे मात्र 6 वर्ष की अल्पआयु

में ही अनाथ हो गये और उनका पालन-पोषण सामान्य ढंग से हुआ। इस्लामी परम्पराओं से यह विदित होता है कि वह 'निरक्षर' थे और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार उस समय आया जब उन्होनें 25 वर्ष की आयु में एक विधवा से शादी की। जब वह 40 वर्ष की अवस्था को पहुंचे तो उनमें ऐसे असाधारण लक्षण प्रकट हुये कि वे एक महत्वपूर्ण एवं महान व्यक्ति बन गये हैं।

उस समय अधिकांश अरब निवासी मूर्तिपूजक थे और विभिन्न देवी देवताओं की उपासना करते थे। मक्का में ईसाई तथा यहूदी भी आबाद थे जिनकी संख्या बहुत थोड़ी थी और निःसन्देह हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने उनसे भी यह सुना कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सृष्टा, स्वामी और शासक मात्र एक ईश्वर है। जब हज़रत मुहम्मद 40 वर्ष के हुये तो उनको पूर्ण विश्वास हो गया कि वही ईश्वर उनसे सम्बोधित हो रहा है और उसने उन्हें सत्यधर्म के प्रचार एवं प्रसार हेतु चुन लिया है।

तीन वर्षों तक हज़रत मुहम्मद अपने परम मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के बीच इस्लाम का प्रचार करते रहे। फिर लगभग 613 ई. में उन्होंने सार्वजनिक रूप से इस्लाम का प्रचार आरम्भ कर दिया। जब धीरे-धीरे उनके अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी तो मक्का के सरदार उन्हें अपने लिये

गम्भीर ख़तरा समझने लगे। परिस्थितिवश 622 ई. में हज़रत मुहम्मद सल्ल., इस्लाम धर्म के प्रचार एवं अपनी सुरक्षा हेतु मक्का से मदीना (जो कि मक्का से लगभग 200 मील दूर उत्तर में स्थित है) प्रस्थान कर गये जहां उनको गौरवपूर्ण राजनैतिक शक्ति प्राप्त हुई।

मक्का से मदीना प्रस्थान करने की यह घटना ''हिज़रत'' के नाम से जानी जाती है जो कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. के जीवन की एक क्रान्तिकारी घटना थी। मक्का में उनके अनुयाईयों की संख्या अत्यन्त कम थी जबकि मदीना में उनके समर्थकों की संख्या बहुत बढ़ गयी और वहां उनको इतनी ख्याति एवं शक्ति प्राप्त हुई कि वह एक कुशल शासक बन गये। अगले कुछ ही वर्षों में, जबकि हज़रत मुहम्मद सल्ल. के अनुयाईयों की संख्या में दिन ब दिन वृद्धि होती गयी, उसी बीच मक्का और मदीना के मध्य जंगों का एक सिलसिला चल पड़ा। जंगों का यह सिलसिला 630 ई. में तब रुका जब हज़रत मुहम्मद को मक्का पर विजय प्राप्त हुई और उन्होंने एक सफल विजेता के रूप में मक्का में प्रवेश किया। उनके जीवन के शेष ढाई वर्षों में अरब के कबाइली क़बीलों ने बड़ी तेज़ी से इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। 632 ई. में जब हज़रत मुहम्मद सल्ल. का स्वर्गवास हुआ तो वह उस समय दक्षिणी अरब के सर्वाधिक प्रभावशाली शासक थे।

अरब के बद्दू क़बीले उग्र लड़ाके के रूप में विख्यात थे। परन्तु उनकी संख्या बहुत कम थी तथा वे आपसी मतभेद एवं विनाशकारी युद्ध की महामारी से ग्रस्त थे। देश के उत्तर में आबाद कृषि प्रधान क्षेत्रों की सेनाओं के साथ उनकी कोई तुलना नहीं थी। हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने पहली बार उन बद्दुओं को एकता की लड़ी में पिरोया और उनको एक ईश्वर की उपासना के लिये प्रेरित किया। इसके फलस्वरूप अरब सेना की एक छोटी सी टुकड़ी ने मानव इतिहास के पन्नों पर अपने विजयों की लम्बी श्रृखंला दर्ज करवा दी। अरब के पूर्वोत्तर में स्थित विशाल ईरानी साम्राज्य तथा उत्तर पश्चिम बाइज़ैन्टाईन अथवा पूर्वी रोमन साम्राज्य जिसका प्रमुख केन्द्र कुसतुनतुनिया था, को अरब सेनाओं ने जीत लिया फिर भी हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कर्मों एवं कथनों से प्रेरित एवं उत्साहित अरब सेनाओं ने शीध्र ही मेसोपोटामिया, सीरिया तथा फिलिस्तीन को युद्ध में पराजित कर दिया। 642 ई० में अरबों ने मिस्र को वाईजेन्टाइन साम्राज्य से छीन लिया और 637 ई० में क़ादसिया युद्ध में ईरानी सेनाओं को तथा 642 ई. में नेहवंड की सेनाओं को कुचल डाला । परन्तु इन सबके बावजूद इन व्यापक विजय अभियानों में हज़रत मुहम्मद सल्ल. के परम मित्रों तथा उत्तराधिकारियों जो कि अबु बक्र

और उमर इब्ने ख़त्ताब (रज़ि.) के नेतृत्व में जारी थे, अरबों का आगे बढ़ना नहीं रूका । 711 ई. तक अरब सेनाओं ने उत्तरी अफ्रीका से लेकर अटलांटिक महासागर तक सम्पूर्ण क्षेत्र पर पूर्ण रूप से अपना अधिकार जमा लिया। फिर वे यहां से उत्तर की ओर मुड़ीं और जिब्राल्टर के जलडमरूमध्य को पार करती हुई विज़ीगोथिक स्पेनी साम्राज्य को भी जीत लिया।

एक समय के लिए तो ऐसा प्रतीत होने लगा था कि मुस्लिम सेना पूरे ईसाई यूरोप को अपने अधीन कर लेगी। परन्तु 732 ई० में टु अर्स के प्रसिद्ध युद्ध में जिसमें मुस्लिम सेना फ्रांस के मध्य तक पहुंच चुकी थी, अंततः फ्रांसीसी सेनाओं से पहली बार पराजित हो गई। फिर भी सदी की इतनी अल्प अवधि में ही पैग़म्बर द्वारा प्रेरित बद्दू कबीलों की उत्साही सेनाओं ने भारतीय उपमहाद्वीप की सीमाओं से लेकर अटलांटिक महासागर तक के एक विशाल क्षेत्र पर अपनी विजय पताका लहरा दी, जो कि उस समय तक विश्व की सबसे बड़ी हुकूमत थी। उन सभी क्षेत्रों के निवासियों ने भारी संख्या में इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

लेकिन ये सारी विजयें स्थायी सिद्ध नहीं हुईं। ईरानी लोग पैग़म्बर के धर्म के प्रति वफ़ादार तो रहे लेकिन उन्होंने अरबों से आज़ादी हासिल कर ली और 700 वर्षों के बाद

स्पेनी सेनाओं ने दुबारा पूरे स्पेन को ईसाई क्षेत्र में बदल डाला। परन्तु उत्तरी अफ्रीका के सम्पूर्ण तट की भांति, मेसोपोटामिया और मिस्र जो कि प्राचीन सभ्यता के प्रमुख केन्द्र माने जाते थे, अरब में ही रहे। यह नया धर्म अपनी विशेषताओं के कारण मुस्लिम सेनाओं द्वारा विजित क्षेत्रों से भी दूर, बहुत दूर-दूर तक फैलता रहा है, आज अफ्रीका तथा मध्य एशिया में यहां तक कि पाकिस्तान उत्तरी भारत और इंडोनेशिया में करोड़ों की संख्या में इस धर्म के मानने वाले लोग मौजूद हैं। इंडोनेशिया में तो यह धर्म एकता का सूत्र ही है हालांकि भारतीय उपमहाद्वीप में हिन्दुओं तथा मुसलमानों के मध्य झगड़े इस एकता की राह में सबसे बड़ी रुकावट हैं।

तब प्रश्न यह उठता है कि मानव-इतिहास पर पड़े हज़रत मुहम्मद सल्ल. के प्रभावों का मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है? दूसरे धर्मों की तरह इस्लाम का भी अपने अनुयाईयों के जीवन पर व्यापक प्रभाव है। प्रस्तुत पुस्तक में विश्व के लगभग सभी बड़े धर्मों के संस्थापकों को स्थान मिला है। परन्तु इस बात पर लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि विश्व में ईसाइयों की संख्या मुसलमानों से लगभग दो गुनी होते हुये भी हज़रत मुहम्मद सल्ल. को प्रथम स्थान पर रखा गया है और हज़रत ईसा को नहीं। इस निर्णय के दो

प्रमुख कारण हैं। प्रथम हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने इस्लाम धर्म के विकास में जितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उसकी तुलना में हज़रत ईसा मसीह ने ईसाई धर्म के लिए नहीं निभाई। यद्यपि ईसाई धर्म की नैतिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों, जो कि यहूदी धर्म से भिन्न हैं, की स्थापना का श्रेय हज़रत ईसा मसीह ही को जाता है, तथापि सैन्टपॉल ईसाई धर्म के मुख्य विस्तारक थे तथा ईसाई धर्म के सिद्धान्तों के मुख्य प्रचारक और न्यू टेस्टामेंट के अधिकांश भाग के लेखक थे।

हज़रत मुहम्मद सल्ल. इस्लामी धर्म शास्त्र और उसकी मूल धार्मिक एवं नैतिक सिद्धान्तों के प्रतिपादक और प्रणेता थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने इस्लाम धर्म के विस्तार में तथा उसके सिद्धान्तों को व्यवहारिकता प्रदान करने में मुख्य भूमिका भी निभाई। इसके अलावा वह पवित्र धर्मग्रन्थ कुरआन के प्रस्तुतकर्ता भी थे जो कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. की दिव्य दृष्टि का एक संकलन है और जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के जीवनकाल में ही अत्यन्त विश्वस्त लोगों द्वारा उन वह्यों (ईशवाणी) को लिपिबद्ध कर लिया गया था। और उनके देहांत के कुछ दिन बाद ही उन प्रतिलेखों को संकलित कर सुरक्षित कर लिया गया था। इसीलिये कुरआन मुहम्मद सल्ल. की पवित्र शिक्षाओं के ठीक-ठीक उन्हीं मूल

शब्दों में पेश करता है। जबकि हज़रत ईसा की शिक्षाओं का कोई संकलन मूल स्वरूप में उपलब्ध नहीं है। मुसलमानों के जीवन में कुरआन का जितना महत्व एवं प्रभाव है उसकी तुलना में ईसाइयों के जीवन पर बाइबिल का प्रभाव नहीं है। हज़रत मुहम्मद सल्ल. का प्रभाव कुरआन के माध्यम से मुसलमानों पर व्यापक है। वास्तव में ईसाइयों के जीवन और कर्म पर हज़रत ईसा मसीह तथा सैन्टपॉल दोनों के संयुक्त प्रभावों को मिलाकर जितना प्रभाव है उससे बहुत अधिक और अत्यन्त व्यापक प्रभाव मुसलमानों के जीवन और कर्म पर हज़रत मुहम्मद सल्ल. का है। विशुद्ध धार्मिक स्तर पर यह प्रतीत होता है कि मानव इतिहास में हज़रत मुहम्मद सल्ल. उतना ही प्रभावशाली हैं जितना कि ईसा मसीह।

इतना हीं नहीं, हज़रत मुहम्मद सल्ल. (हज़रत ईसा मसीह के विपरीत) राजनैतिक तथा धार्मिक लीडर भी थे वास्तव में अरबों के विजय अभियानों के पीछे एक प्रबल प्रेरक शक्ति होने के कारण वह मानव-इतिहास में सर्वाधिक एवं सर्वकालिक शक्तिशाली राजनेता के रूप में स्वीकार किये गये हैं।

विश्व की अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं के सम्बन्ध में एक व्यक्ति यह कह सकता है कि ये घटनायें तो होनी ही थीं और किसी विशेष राजनीतिक नेता के मार्गदर्शन

के बिना घटित होतीं। उदाहरण स्वरूप दक्षिणी अमेरिका के बहुत से उपनिवेशों ने स्पेन से स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली जबकि साइमन वौलिवर का कोई अस्तित्व भी नहीं था। लेकिन अरब के विजय अभियानों के बारे में यह नहीं कहा जा सकता। हज़रत मुहम्मद सल्ल. से पूर्व ऐसा कुछ भी नहीं था और ऐसा कहने का कोई औचित्य भी नहीं है कि ये सारी विजयें हज़रत मुहम्मद सल्ल. के बिना भी प्राप्त की जा सकती थी। मानव–इतिहास में इन विजयों की तुलना केवल 13वीं शताब्दी में मंगोलों की विजयों से की जा सकती हैं जो बुनियादी तौर पर चंगेज़ ख़ां के प्रभाव का नतीजा थी। हालांकि ये सारी विजयें अरब–विजयों की अपेक्षा अधिक व्यापक थीं, परन्तु स्थायी सिद्ध नहीं हो सकीं और भी मंगोलों के कब्ज़े में केवल वही क्षेत्र रह गये हैं, जो चंगेज ख़ां से पहले ही उनके कब्ज़े में थे।

अरबों के अनेक विजय अभियान मंगोलों के विजय अभियान से बहुत भिन्न हैं। ईराक से मोरक़्को तक अरब देशों की एक पूरी श्रृखंला है, जो न केवल इस्लाम धर्म पर विश्वास रखने के कारण बल्कि उनके बीच अरबी भाषा, इतिहास और संस्कृति के कारण जुड़े हुये हैं। इस्लाम धर्म में क़ुरआन को केन्द्रीयता प्राप्त है और यह पवित्र ग्रंथ विशुद्ध अरबी भाषा में अवतरित हुआ है, जिसके कारण अरबी

भाषा टूटने और विभिन्न स्थानीय बोलियों में बंटने से 13- 14 सौ वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद आज भी सुरक्षित है। जबकि आजकल इन अरब देशों के बीच टकराव और मतभेद अवश्य पाये जाते हैं परंतु यह मतभेद और भिन्नतायें इतने बड़े पैमाने पर नहीं हैं कि इनके कारण अरब देशों और वहां की जनता के बीच पायी जाने वाली एकता जैसी महत्वपूर्ण चीज़ को नज़र अन्दाज कर दिया जाये। उदाहरण स्वरूप 1973-74 में अरब देशों द्वारा लगाये गये तेल प्रतिबंधों में न तो ईरान और न हीं इन्डोनेशिया शामिल था, जबकि ये दोनों ही देश तेल उत्पादक देश हैं और दोनों ही इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं। इस सम्बन्ध में यह नहीं कहा जा सकता है कि सभी अरब देश या केवल अरब देश ही इस प्रतिबंध में सम्मिलित हुये।

तो हम देखते हैं कि मानव इतिहास में सातवीं शताब्दी में अरबों द्वारा जो विजय अभियान चलाये गये थे, आज भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। यहीं राजनैतिक और धार्मिक प्रभावों का अद्वितीय समिम्श्रण, मेरे विचार में हज़रत मुहम्मद सल्ल. को मानव इतिहास का एक मात्र सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व होने का पात्र ठहराता है।

★ ★